प्रेस विज्ञप्ति

आध्यात्मिकता से आएगी न्याय में पारदर्शिता – न्यायमूर्ति ए॰ के॰ सीकरी

आध्यात्मिक सशक्तिकरण से ही होगा सामाजिक समस्याओं का निवारण–न्यायमूर्ति ईश्वैया

अच्छा करोगे तो अच्छा पाओगे

12 नवम्बर 2016 गुरूग्राम

भारत ऐसा देश है जहाँ आध्यात्मिकता का विशेष स्थान है। आध्यात्मिक नेताओं और महात्माओं की ये उद्गम स्थली रही है। **उक्त विचार सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति ए॰ के॰ सीकरी ने ब्रह्माकुमारीज़** के भोड़ाकलां स्थित ओम् शान्ति रिट्रीट सेन्टर में शनिवार 12 नवम्बर को न्यायविदों के लिए स्प्रिरिच्युअलिटी फोर जेस्ट एण्ड पीसफुल सोसाइटी विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता से ही न्याय प्रक्रिया में पारदर्शिता लाई जा सकती है। आध्यात्मिकता को जीवन में धारण करने से न्याय से जुड़े हुये सभी लोगों में प्रेम, दया और शान्ति जैसे मूलभूत गुणों का विकास होगा। सीकरी ने कहा कि न्यायाधीश कोई भगवान नहीं हैं, उनसे भी गलती हो सकती है। भगवान ने उन्हें न्याय के कार्य के लिए चुना है। उन्होंने कहा कि भगवान ने जब हमें बनाया तो सभी आध्यात्मिक शक्तियों से सम्पन्न किया था। लेकिन धीरे–धीरे भौतिक जगत के प्रभाव के कारण हमारी वो शक्तियां क्षीण होती गई। उन्होंने कहा कि ओआरसी में आने से ही मुझे एक अद्भुद ऊर्जा का अनुभव हो रहा है।

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति वी॰ ईश्वरैया ने अपने उद्बोधन में कहा कि जब हमारा भारत देश आध्यात्मिकता शक्तियों से सम्पन्न था तो सोने की चिड़िया कहलाता था। लेकिन आज उन मूल्यों की कमी के कारण देश की हालत बहुत ही नाज़ुक दौर से गुजर रही है। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक सशक्तिकरण से ही समाज का विकास संभव है। मैं जबसे ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के सम्पर्क में आया तबसे मेरे जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है। मेरे कार्य करने की क्षमता में निखार आया है।

सुप्रीम कोर्ट के रजिस्टरार न्यायमूर्ति एम॰ वी॰ रमेश ने कहा कि आध्यात्मिकता ही जीवन का मुख्य सार है। बिना आध्यात्मिकता के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। उन्होंने कहा कि मैं काफी समय से बह्माकुमारीज़ के साथ जुड़ा हुआ हूँ। चाहे कैसी भी दबाव की परिस्थितियां हों लेकिन मैं सदैव ये महसूस करता हूँ कि जैसे परमात्मा के मार्ग दर्शन में चल रहा हूँ।

विशेष रूप से इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्य सचिव भ्राता बृजमोहन जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमारे संविधान व न्याय प्रक्रिया में प्राय: दो शब्दों का विशेष महत्व है, सत्यमेव जयते और अहिंसा परमोधर्म। वास्तव में इन दोनों शब्दों में आध्यात्मिकता समाई हुई है। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता हमें स्वयं से जोड़ती है। स्वयं का बोध होने से ही जीवन सुख–शान्ति से भर जाता है। सच्ची शान्ति एवं खुशी स्वयं के अन्दर है। भौतिक चीज़ों का सुख विनाशी है। उन्होंने कहा कि अच्छा करने से ही अच्छाई की प्राप्ति होती है।

ओआरसी की निर्देशिका आशा दीदी ने अपने आर्शीवचन में कहा कि योग ही एक ऐसा माध्यम है, जिससे जीवन में आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। कार्यक्रम के प्रति मुम्बई से आए सुप्रसिद्ध मनोचिकित्सक डा॰ गिरीश पटेल ने भी अपनी शुभ–कामनाएं व्यक्त की। दिल्ली करोलबाग सेवाकेन्द्र की संचालिका **बी॰ के॰ पुष्पा दीदी** ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि इस कार्यक्रम का मूल उद्देश्य मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना करना है। **जोधपुर से आए प्रसिद्ध वकील बी॰ एल॰ महेश्वरी** ने न्यायविदों के लिए ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही सेवाओं का विस्तार से वर्णन किया। **दिल्ली से आए प्रसिद्ध वकील मुकेश आहुजा** ने सभी का धन्यवाद किया। **कार्यक्रम का संचालन प्रसिद्ध वकील बी॰ के॰ लता** ने किया। कार्यक्रम में न्यायाधीश, वकील एवं न्याय क्षेत्र से जुड़े अन्य कई जाने माने लोगों ने शिरकत की।

कैप्शन- 1. न्यायमूर्ति ए॰ के॰ सीकरी (सुप्रीम कोर्ट)

2. न्यायमूर्ति वी॰ ईश्वरैया (अध्यक्ष, राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग)

3. न्यायमूर्ति एम॰ वी॰ रमेश (रजिस्टरार, सुप्रीम कोर्ट)

4. बी॰ के॰ बृजमोहन

5. आशा दीदी

6. पुष्पा दीदी

7. डा॰ गिरीश पटेल

8. दीप प्रज्ज्वलित करते हुए बाँए से मुकेश आहुजा, एम॰ वी॰ रमेश, बी॰ एल महेश्वरी, जस्टिस ईश्वरैया, डा॰ गिरीश पटेल, जस्टिस ए॰ के॰ सीकरी, बी॰ के॰ बृजमोहन, आशा दीदी, बी॰ के॰ पुष्पा दीदी, बी॰ के॰ लता बहन

9. कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह